अरस्तू के दासता सिद्धान्त की आलोचना
Criticism of Aristotle's Theory of Slavery

अरस्तू के सम्पूर्ण राजनीतिक चिन्तन में उसके दासता सबंधी विचार ही ऐसे है जिन्हें मानवीय आधार पर स्वीकार नहीं किया जा सकता है। अरस्तु के दास-प्रथा के इस सिद्धान्त की अविश्वसनीय, अप्राकृतिक, अमानवीय और यूनानी पूर्वाग्रहों से ग्रसित होने के कारण कटु आलोचना की गई है। उसकी आलोचना के प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है —

(1) दास प्रथा प्राकृतिक नहीं है — (Slavery is not natural)

दास प्रथा प्राकृतिक है और कुछ लोग जन्म से ही शासक और कुछ जन्म से ही शासित होते है गलत है यह ठीक है कि लोगों में बुद्धि और विवेक समान नहीं होता फिर भी लोगो मे एक प्राकृतिक समानता होती है जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। अरस्तु हमें प्राकृतिक दास एंव स्वामी के चयन की कोई सफल विधि नहीं दे सका है।

(2) मानव समूह का विभाजन सम्भव नहीं — (Division of human group not Possible)

अरस्तू द्वारा प्रतिपादित दास का औचित्य पूर्ण रूप से इस मान्यता पर आधारित है कि मानव समूह को गुण और योग्यता से युक्त उच्च वर्ग तथा बुद्धिहीन निम्न वर्ग मे विभाजित किया जा सकता है किन्तु मानव समूह को इस प्रकार के दो वर्गो में विभाजित करना और किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह के सबंध में यह कहना कि वह गुण और योग्यता की दृष्टि से बिल्कुल हीन है सम्भव नहीं है।

(3) अनुचित — (improper)

सम्पूर्ण मानव जाति को दो भागों में विभाजित करना प्रोफेसर (Ross) रॉस के अनुसार अनुचित है यद्यपि व्यक्ति-व्यक्ति में बौद्धिक और नैतिक गुणों की दृष्टि से अन्तर हो सकता है लेकिन इस आधार पर उन्हें स्वामी-दास और शासक-शासित के रूप में

Scanned with CamScanner

विभाजित करना अनुचित ही नहीं अन्याय पूर्ण भी है।

(4) अनुदारवादी धारणा —

अरस्तू की यह मान्यता कि प्राकृतिक दास में केवल अत्यन्त सीमित बुद्धि, इतनी सीमित कि यह केवल दासता के अपने कर्तव्यों को ही समझ सके, होती है एक बड़ी गलत मान्यता है किस आधार पर वह यह मान्यता को लेकर चलता है? इस प्रश्न का हमें कोई तर्कसंगत उत्तर ढूंढने पर नहीं मिलता है।

साथ ही दासों को पशुतुल्य मानकर एवं उनके कार्यों में पूर्ण समानता देखने का प्रयत्न करके उसने अत्यन्त अनुदारता का ही परिचय दिया है मानवोचित उदारता का नहीं।

(5) विरोधाभास — (Contradiction)

एक ओर तो अरस्तू राज्य का उद्देश्य मनुष्य को श्रेष्ठ जीवन प्रदान करना मानता है और दूसरी ओर वह कुछ व्यक्तियों को श्रेष्ठ जीवन की प्राप्ति से वंचित करता है। एक ओर वह दासता को प्राकृतिक बताता है और दूसरी ओर कहता है कि दास को दासता से मुक्ति मिल सकती है।

अरस्तू का दासता का सिद्धान्त

(6) सोद्देश्यता सिद्धान्त का विरोधी है → (Aristotle's Theory of Slavery is Against His Theory of Teleology)

अरस्तू के दासता संबंधी विचार उसके सोद्देश्य (Teleology) सिद्धान्त से भी मेल नहीं खाते क्योंकि इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जीवन किसी न किसी श्रेष्ठ उद्देश्य की उपलब्धि के लिए होता है दासता की जंजीरों में जकड़े जाने पर व्यक्ति अपने में निहित विकास की क्षमता का लेशमात्र भी उपयोग नहीं कर सकता।

अतः सोद्देश्य सिद्धान्त के आधार पर दासता को प्राकृतिक नहीं माना जा सकता।

(7) अव्यावहारिक → (impractical)

उसका विचार व्यावहारिकता की कसौटी पर भी पूरे नहीं उतरते यदि उसका यह कथन स्वीकार कर लिया जाए कि

दासता एवं स्वामित्व के तत्व व्यक्तियों में जन्मजात है तो यह व्यावहारिक कठिनाई उपस्थित हो जाती है कि यह निश्चय किस प्रकार किया जाए कि कौन-कौन से व्यक्ति नैसर्गिक रूप से दासत्व के तत्व लेकर पैदा हुए हैं एवं किन में स्वामित्व के गुण विद्यमान हैं। क्योंकि अरस्तू ने दोनों ही पक्षों के चयन की कोई सफल विधि नहीं दी है।

(8) जातीय अहंकार का प्रतीक → (Symbol of ethnic arrogance)

दासता के प्रश्न पर विचार करते समय अरस्तू ने अपने जातिगत अभिमान एवं जातीय हितों को पूरी तरह से ध्यान में रखा है वह यूनानी जाति को शासकीय जाति मानता है यह उसके अहंकार का प्रतीक है क्योंकि शासकीय जाति का आधार पूर्णतः खंडन हो चुका है स्वशासन और स्वराज्य के सिद्धान्त ~~के सिद्धान्त~~ के प्रतिपादन के माध्यम से यह सिद्ध हो चुका है कि विश्व की हर जाति-प्रजाति शासक और शासित बनने के योग्य है यह निर्णय परिस्थितिजन्य है, प्राकृतिक नहीं।

(9) अलोकतांत्रिक सिद्धान्त → (Undemocratic Theory)

यह सिद्धान्त लोकतंत्र के दो आधार स्तम्भ स्वतंत्रता और समानता दोनों के विपरीत है श्रमिकों को जो समाज के वास्तविक रचयिता होते हैं वे उस समाज में सम्मानपूर्वक रहने के भी हकदार नहीं हैं यह कहां का न्याय है!

(10) अतार्किक →

दास एवं स्वामी के संबंध मित्रतापूर्ण होने चाहिए किन्तु वह यह भूल जाता है कि मित्रता सामान्यतया समान स्थिति वाले लोगों में ही हो सकती है, असमान स्थिति वाले लोगों में नहीं। अतः सभी दृष्टियों — बौद्धिक, मानसिक, आर्थिक

Scanned with CamScanner

सामाजिक दो हीन व्यक्तियों (दासों) एवं उन्नत व्यक्तियों (स्वामियों) में मित्रता के व्यवहार तथा दास स्वामी के व्यवहार में किस प्रकार तालमेल बैठाया जा सकता है। क्योंकि मित्रों पर निरंकुशता से शासन नहीं किया जा सकता जबकि दासों पर निरंकुशता से शासन किया जाता है।

(11) अमनोवैज्ञानिक → (unpsychological Theory)

सिद्धान्त अरस्तू यह कहता है कि दास को स्वयं को स्वामी के व्यक्तित्व में लीन कर देना चाहिए जबकि मनोविज्ञान यह सिद्ध करता है कि एक व्यक्ति शारीरिक समर्पण तो कर सकता है लेकिन मानसिक समर्पण नहीं।

(12) अवैज्ञानिक → (Unscientific)

अरस्तू इस बात को मानता है कि कुछ व्यक्ति जन्म से ही मूर्ख व मूढ़ होते हैं परन्तु इस वैज्ञानिक तथ्य को भूल जाता है कि अच्छे वातावरण, उचित दशाओं तथा उचित शिक्षा या अन्य साधनों को प्राप्त करने पर वे बुद्धिमानी हो जाते हैं।

ऐसा कोई भी सिद्धान्त जो मनुष्य को पशुतुल्य मानता हो, वैज्ञानिक कभी नहीं हो सकता।

3) समुचित अवकाश सभी को मिलना चाहिए — (Everyone needs Liesure)

मनुष्य दास इसलिए रखता है कि उसको शासन कार्यों, संगीत, कला और साहित्य के माध्यम से अपना बौद्धिक विकास का अवसर मिल सके। परन्तु यह दो तरह न्यायसंगत नहीं लगता है

(1) प्रथम तो इतने अवकाश की आवश्यकता ही नहीं कि सारा काम दास करे और स्वामी समाजसेवा के नाम पर ऐशो आराम का जीवन व्यतीत करे।

(2) यह कहां तक न्यायोचित है अवकाश का समय और बौद्धिक विकास के लिए समय समाज के केवल एक अंग को मिले और इसरा

Scanned with CamScanner

अंग श्रम सुविधा से वंचित रहे।

निष्कर्ष — संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि दासता विषयक अरस्तू के विचार अत्यन्त अवैज्ञानिक, असंगत और मानवता विरोधी हैं। अरस्तु के समय में यूनान में ही नहीं, विश्व के अन्य राज्यों में भी दास-प्रथा एक आम और सर्वमान्य प्रथा थी उनकी सारी सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था इसी पर आधारित थी। दासों ने अमानवीय परिस्थितियों में रहकर भी विश्व सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। अरस्तू भी उनके श्रम के महत्व से परिचित था। अतः वह दास-प्रथा के उन्मूलन का समर्थक बनने के स्थान पर उसे और अधिक मानवीय बनाने का समर्थक था और वही उसने किया।

Scanned with CamScanner